सूरदास का वात्सल्य वर्णन हिन्दी साहित्य की अनुपम निधि है। श्रीकृष्ण के बाल-सौंदर्य की झाँकी के साथ-साथ बाल-मनोविज्ञान का जैसा चित्रण सूरकाव्य में उपलब्ध होता है वैसा अन्यत्र नहीं मिलता। बालक की ~~चेष्टाएँ~~ चेष्टाएँ, मातृ-हृदय की आशंकाएँ, पुत्र के प्रति वात्सल्य भाव, बाल-वृत्तियों का निरूपण, मातृ हृदय की झाँकी आदि का मर्मस्पर्शी एवं मनोहारी चित्रण सूरदास ने किया है। उनकी इसी विशेषता को लक्ष्य करके आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने लिखा है - "बाल सौंदर्य एवं स्वभाव के चित्रण में जितनी सफलता सूर को मिली है, उतनी अन्य किसी को नहीं। वे अपनी बंद आँखों से वात्सल्य का कोना-कोना झाँक आए हैं।"

Scanned with OKEN Scanner

सूर के वात्सल्य वर्णन में स्वाभाविकता, विविधता, रमणीयता एवं मार्मिकता है, जिसके कारण वे वर्णन अत्यंत हृदयग्राही एवं मर्मस्पर्शी बन पड़े हैं। यशोदा के बहाने सूरदास ने मातृ हृदय का ऐसा स्वाभाविक, सरल और हृदयग्राही चित्र खींचा है कि आश्चर्य होता है। वात्सल्य के दोनों पक्षों - संयोग एवं वियोग का चित्रण सूरकाव्य में उपलब्ध होता है। वात्सल्य के संयोग पक्ष में उन्होंने एक ओर तो बालक कृष्ण की रूप माधुरी का चित्रण किया है तो दूसरी ओर बालोचित चेष्टाओं का मनोहारी वर्णन किया है :-

सोभित कर नवनीत लिए।
घुटुरुन चलत रेनु तन मंडित,
मुख दधि लेप किए।।"

सूर ने बालकों के हृदयस्थ मनोभावों का चित्रण भी बड़े मनोयोग से किया है। बालकों की खीझ, पारस्परिक प्रतिस्पर्द्धा, बुद्धि चातुर्य, गलती को छिपाने की प्रवृत्ति, भोले-भाले

तर्क आदि का विशद चित्रण सूर काव्य में मिलता है। माता यशोदा के दूध पीने से चोटी बढ़ने वाली बात पर कृष्ण एक हाथ से चोटी पकड़कर और दूसरे हाथ से दूध का गिलास पकड़कर माता यशोदा से पूछते हैं: " मैया कबहिं बढ़ैगी चोटी ?
किती बार मोहिं दूध पियत भई
यह अबहूं है छोटी ।।"

माखन चोरी करते रंगे हाथ पकड़े जाने पर बड़ी चातुरी से अपनी निर्दोषता प्रमाणित करते हुए कहते हैं :-
" मैया मैं नहिं माखन खायो।
ख्याल परै ये सखा सबै मिलि,
मेरे मुख लपटायो ।।"

बलराम के यह कहने पर कि तू यशोदा का पुत्र नहीं है, कृष्ण खीझ जाते हैं और अपनी नाराजगी यशोदा के समक्ष प्रस्तुत करते हैं:-
" मैया मोहिं दाऊ बहुत खिझायो।
मोसों कहत मोल को लीन्हो,
तू जसुमति कब जायो ।।"

बच्चों की जिद बेतुकी होती है. कृष्ण ने हठ पकड़ लिया है कि मैं तो चन्द्र लिखौना लूँगा। अब मैया यशोदा क्या करे। पानी में चंद्र का प्रतिबिम्ब दिखाती है। पर वे नहीं मानते। तब यशोदा कहती है कि तेरे लिए मैं चाँद-सी बहू लाऊँगी, तो कृष्ण कहते हैं कि ठीक है, मैं अभी विवाह करने जाऊँगा। तो दूसरी समस्या आ खड़ी हुई।

सूर ने जितनी तन्मयता से वात्सल्य के संयोग पक्ष का वर्णन किए हैं, उतनी ही तन्मयता से वियोग पक्ष का भी किया है। कृष्ण के मथुरा प्रस्थान करते समय यशोदा कितनी विकल है.

"यशोदा बार-बार यों भाखै।
है कोई ब्रज में हितू हमारो,
चलत गोपालहिं राखै॥"

कृष्ण के मथुरागमन के उपरांत- मात यशोदा का हृदय अत्यंत- व्याकुल हो उठता है। उन्हें लगता है कि कृष्ण की आदतों से वे जितनी

परिस्थिति थी, उतना और कोई उन्हें नहीं जानता। वे देवकी को संदेश भेजती हैं-

" संदेसो देवकी सों कहियो।
हौं तो धाय तिहारे सुत की,
दया करत ही रहियो।।"

निष्कर्ष के तौर पर यह कहा जा सकता है कि सूरदास का वात्सल्य वर्णन अत्यंत हृदयस्पर्शी, मार्मिक एवं स्वाभाविक है। वात्सल्य का कोई ऐसा क्षेत्र नहीं, जिसका वर्णन सूरदास ने न किया हो। उनके वात्सल्य वर्णन में तन्मयता स्वाभाविकता, मनोवैज्ञानिकता एवं सहजता है। उन्होंने केवल बाल-लीला का ही चित्रण नहीं किया, अपितु बालकों की मानसिक प्रवृत्ति का भी हृदयग्राही वर्णन मनोविज्ञान के परिप्रेक्ष्य में किया है। अतः यह कहना तर्कसंगत होगा कि सूर के वात्सल्य वर्णन में मनोवैज्ञानिकता का पुट है। निश्चय ही सूर वात्सल्य के सम्राट हैं और उनका वात्सल्य वर्णन हिंदी साहित्य की ऐसी अपूर्व निधि है, जिस पर हम गर्व कर सकते हैं। (क्रमशः)

—